लोकप्रिय विज्ञान साहित्य

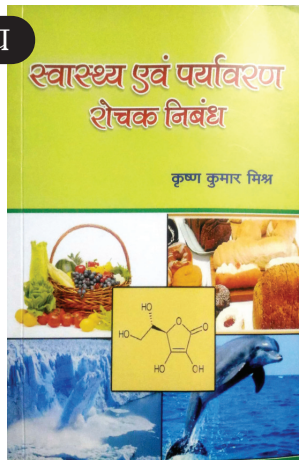

पुस्तक का नाम : स्वास्थ्य एवं पर्यावरण-रोचक निबंध
लेखक : कृष्ण कुमार मिश्र
प्रकाशक : आधुनिक प्रकाशन गृह एवं विज्ञान परिषद् प्रयाग, इलाहाबाद
प्रकाशन वर्ष : प्रथम संस्करण 2017
पृष्ठ : 102
मूल्य : 120 रुपए

पुस्तक विद्वान लेखक के 2011 से 2016 के बीच लिखे और देश की प्रतिष्ठित हिंदी विज्ञान पत्रिकाओं में प्रकाशित 12 जनोपयोगी लेखों का स्वयं लेखक द्वारा किया गया संकलन है। इनमें से एक लेख 'न्यूरोट्रांस्मिटर : मानसिक स्वास्थ्य के निर्धारक' मूलतः अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ था जिसका हिंदी अनुवाद भी स्वयं लेखक ने करके इसे पुस्तक में शामिल किया है। पुस्तक में शामिल 12 लेखों में से 7 का संबंध मानव स्वास्थ्य से है और शेष 5 का पर्यावरण से। वैसे तो पर्यावरण का स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है किंतु ऐसा लगता है कि 2015 तक तो विद्वान लेखक की चिंताओं और चिंतन का रुझान पर्यावरण को लेकर विशेष था परंतु 2015 से मानव स्वास्थ्य पर उनका फोकस बढ़ गया। हां, एक अद्यतन अप्रकाशित लेख 'दिल की सेहत का सवाल : कोलेस्टरॉल' को भी संकलन में सम्मिलित किया गया है। सभी लेखों का उद्देश्य संभवतः यह चेतना जगाना है कि मानव-स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति सबसे बड़ी जिम्मेदारी स्वयं मानव की है और इसलिए उसे इन मुद्दों के प्रति न केवल सतर्क रहना चाहिए, आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर उन्हें संभालने के प्रयास भी करने चाहिए। प्रत्येक लेख काफी मेहनत से तैयार किया गया है इसलिए बहुत ज्ञानपरक बन पड़ा है और इस अर्थ में पुस्तक अपने उद्देश्य में कामयाब रही है।

लेखक रसायन के विद्वान हैं, इसलिए उन्हें कार्बनिक यौगिकों के संरचना सूत्रों के प्रति बहुत-बहुत लगाव पड़ता है। लेकिन जिन हिंदी पाठकों के लिए वे ये लेख लिख रहे हैं उनके लिए ये सूत्र काला अक्षर भैंस बराबर हो सकते हैं। इनके स्थान पर यदि यौगिकों के लाभों और उनसे हो सकने वाली हानियों पर अधिक ध्यान दिया जाता तो अधिक बेहतर होता।

लेखक दीर्घकाल से हिंदी को विज्ञान की भाषा बनाने के सत्प्रयासों से जुड़े हैं। वे मानक तकनीकी शब्दों के प्रयोग में निष्णात हैं। उनकी भाषा इसके बावजूद प्रवाहमान, सरल और सामान्य जन को समझ आने वाली है। पहली बार किसी तकनीकी शब्द का उपयोग करते समय वे पाठक को उससे परिचित कराते हैं लेकिन इन सब गुणों के बावजूद भाषा में यत्र-तत्र संकल्पनात्मक झोल नजर आते हैं। जैसे पृष्ठ 3 पर चित्र के शीर्षक में सैकरीन से भरे पेय पदार्थ के स्थान पर सैकरीन युक्त पेय पदार्थ लिखना ही शायद उचित होता। पृ. 90 पर रेडियोधर्मिता के उद्भासन के स्थान पर संभवतः रेडियोधर्मी विकिरणों के उद्भासन लिखा जाना चाहिए था।

हिंदी में विज्ञान पुस्तकों की गुणवत्ता के निर्धारणमें प्रकाशकों की भी बड़ी भूमिका रहती है। वर्तनी दोष, जो निश्चय ही अंतिम प्रूफ-रीडिंग और संशोधन के दौरान बरती गई असावधानी के परिणाम होते हैं, पाठक को क्षुब्ध करते हैं। विज्ञान के प्रति समर्पित प्रकाशकों को तो इस ओर विशेष ध्यान देना ही चाहिए।

पुस्तक का आवरण पृष्ठ सुंदर और विषयवस्तु के अनुरूप है। कागज और छपाई अच्छी है। लेखों को एकरंगे पर, विषय अनुरूप चित्रों से सजाया और प्रभावी बनाया गया है। विज्ञान विषय हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों का मूल्य सामान्य जन की पहुंच में कैसे रखा जाए इस विषय पर विचार अवश्य करना चाहिए।

कुल मिलाकर पुस्तक आम आदमी के सरोकारों से जुड़े विषयों पर आधारित होने तथा विस्तृत जानकारी एवं रोचक प्रस्तुति के कारण लोकप्रिय होनी चाहिए। लेखक को बधाई और प्रकाशकों को शुभकामनाएं। ❐